जब ओखली में सिर दिया, तो मूसलों से क्या डरना?

जब ओखली में सिर में दिया तो मूसलों से डरना क्या? कहने का तात्पर्य है कि जिस लक्ष्य को हमने लिया है उसको प्राप्त करने के लिए या जो जिम्मेवारी ली है या मिली है,उसमें आने वाली परिस्थितियों में निर्भीक होकर चलते जाना। व्यवस्था या प्रशासन को बिना दोषी बनाये, बिना किसी सहयोग की अपेक्षा अपने पथ पर मंजिल प्राप्त करने के लिए खुशी से अनवरत चलते जाना।

ओखली कहा ही उसे जाता है जहाँ मूसलों का वार होना ही है अर्थात ओखली बनी ही है मूसलों के वार के लिए, बिना मूसलों के वार के ओखली की कोई सार्थकता नहीं। ओखली के प्रायः तीन कार्य होते हैं किसी चीज को रिफाइन करना,चमकदार बनाना और महीन करना। ओखली में ऐसे ही मूसल नहीं पड़ते,पर जब कोई वस्तु को इन तीनों में कोई भी प्रक्रिया से गुजारना हो तो ही मूसलों का वार होता है। इसी प्रकार संसार में भी जिसने कुछ धारा से अलग अर्थात श्रेष्ठ,शुभ या नवीन कार्य करना चाहा तो परीक्षाओं के हैमर तो लगने ही हैं, जिसने भी ओखली में सिर दिया है,उसको अगर ये बात पता होती है अर्थात वह अनुभवी होता है तो वह अपनी दृढ़ता एवं हिम्मत के साथ अनेक वारों को सहन करता हुआ निरन्तर आगे की ओर चलता जाता है,न ही किसी से शिकायत, न ही वापस लौटने का संकल्प ।

बहादुर रणभूमि में कभी पीठ नहीं दिखाता,खेत रह जाता है पर कायर नहीं बनता। धान जब ओखली में पड़ता है तो चावल बनकर निकलता है,और गेहूँ को जब ओखली में डालकर उसका छिलका उतारा जाता है तो उसमें शाइनिंग आ जाती है जबकि साधारणतया लोग गेंहूँ के छिलके से अनभिज्ञ ही रहते हैं,जब ओखली में चीज पड़ती है तो मूसलों के वार करने के लिए ही पड़ती है, तब यह सोचना कि मूसलों से बच जायें नामुमकिन असम्भव है,इसी प्रकार जब हमने संसार में विकारों की आग में जल रहे जनमानस को बचाने की मुहिम में पदार्पण कर ही लिए हैं तो थोड़ा बहुत तो सेंक आयेगा ही उससे क्या डरना? संसार जिस रास्ते पर आँख बंद करके चल रहा है उसके

विपरीत एक नये रास्ते का अनुसरण करने पर लोगों का कोपभाजन तो बनना ही पड़ेगा, साथ–साथ नवीनता के लिए हर कदम रास्ते को सुगम बनाने की मेहनत भी करनी पड़ेगी। जब पवित्रता के पथ पर चल ही पड़े है तो अपने ही 63 जन्मों के संस्कारों के साथ समाज की अवहेलना एवं छींटाकसी तो सुनना ही पड़ेगा।

चाहे नवनिर्माण या नवीनीकरण दोनों के लिए धीरज एवं सहन करने की शक्ति इन दो शक्तियों की अत्याधिक आवश्यकता होगी ही होगी। लेकिन हमें इस बात का गर्व होना चाहिए कि हम एक नेक काम ही नहीं कर रहे हैं बल्कि एक नये समाज की स्थापना कर रहे हैं,हमें क्या–क्या करना पड़ रहा है व कितना सहन करना पड़ रहा है इसकी क्या फिकर? हम क्या कर रहे हैं इसका हमें गर्व होना चाहिए। जब किसी धर्म स्थापक ने संसार की पीड़ा को देखकर अपनी अन्तस की आवाज को सुनकर एक नवीन विचारधारा से जनमानस के जख्मों पर कुछ मरहम लगाने की कोशिश की तो संसार से उन्हें अनेक दर्द व वेदनायें ही मिली,लेकिन उन्होंने इन बातों को रास्ते की बाधा मानकर रूके नहीं, बल्कि उनकी लगन और बढ़ गयी और संसार से विरक्ति का माध्यम बनी,और अन्त में जितना वे इन चीजों से बेपरवाह हो चलते चले, उतना ही उनकी मत को मजबूती मिली और उन्हें प्रसिद्धि। इसी प्रकार जब क्रान्तिकारियों ने देश को आजाद कराने का बीड़ा उठाया या गॉधी जी ने सैकड़ों वर्षो की गुलामी से मुक्त स्वाधीन होने का बिगुल बजाया, तब चाहे अँग्रेज या अपने ही वतन के लोगों से कितनी भी चुनौतियाँ सामने आयी, पर वे डिगे नहीं,मैदान छोड़कर नहीं भागे,मर मिटे पर डर कर नहीं भागे,यह नहीं देखा कि हमें क्या मिल रहा है या हमें क्या मिलेगा? पर हमें क्या करना चाहिए या देश की आवश्यकता क्या है? यही विचार नजर वा जिगर में प्रचण्ड आग की तरह धधकता रहा। इसी प्रकार ब्रह्मा बाप ने भी जैसे ही परमात्म श्रीमत का अनुसरण कर, उसकी मत पर चले,तो सारा संसार न सिर्फ एक तरफ हो गया बल्कि अपने भी पराये बनकर परीक्षाओं को समस्या बनाकर कर सामना करने के लिए खड़े हो गये थे,समाज या समाज के मनुष्यों की क्या बात करें, स्वयं का शरीर भी चुनौती दे रहा था,पर बाबा ने एक संकल्प भी निगेटिव नहीं चलने दिया। दादियों को ही देखें,

जिन्होंनें बचपन क्या राजसी ठाठ में बिताया! और भगवान का बनते ही वही परिवार दुश्मन एवं सगे सम्बन्धी शैतानों की तरह पेश आने लगे और घर को कैदखाना बना नारी को नर्क की यातनायें दे अपना अहं सिद्ध किया, पर कोमल मन पर एक भी कमजोरी वा निराशा का संकल्प नहीं ला पाये,और जब संसार के कर्मक्षेत्र पर निकली तो संसार में धर्म के ठेकेदारों ने हर हथकंडे अपनाये,पर जिस नारी को अबला समझ वे ठग कर मूर्ख बनाने चले थे, उन्हीं शिवशक्तियों की दृढ़ता एवं निश्चय के आगे हार खाते रहे। राजकुमारों की तरह जीवन जीने वालों को जब ढोढा और छाछ से पेट भरना पड़ा, तब भी वे उसी मौलाई मस्ती की खुमारी में रह 36 प्रकार के व्यजनों के समान ही खुशी में मस्त रहे,यज्ञ की बेगरी लाइफ में भी जीवन जीने का आनन्द लेते रहे,स्वप्न में भी चुनौतियों से भागने का संकल्प नहीं आया। इसी प्रकार विश्व नवनिर्माण में एवं विकारों से तपते संसार को, अपने श्रेष्ठ जीवन का सहयोग देकर भगवान के परम पुनीत कार्य में, उसकी श्रीमत के पथ को जब अपना ही लिए है,बी0 के0 बन ही गये हैं समर्पित हो ही गये, तो अब बार–बार पीछे मुड़कर क्या देखना? संसार के साधन–सुविधायों का क्या आकर्षण? धन और पद के बारे में क्या सोचना? अब चाहे लौकिक हो या अलौकिक,चाहे प्रकृति हो या स्वभाव संस्कार, चाहे बीमारी हो या परिस्थिति, चाहे भौतिकता हो या आधुनिकता, चाहे कोई भी समस्याओं रूपी मूसल आयें, पर हमें डरकर पथ भ्रमित नहीं होना है, एक तो हम नूतन पथ का अनुसरण कर रहे हैं, दूसरा परीक्षाओं के बिना पढ़ाई की समझ कितनी है, यह भी तो पता नहीं पड़ेगा। **हम वह नहीं जो साँचे में ढल गये,हम वो हैं जो साँचे बदल गये।** हम उस संस्कृति के रहवासी है जहाँ कहावत है कि **प्राण जाये पर वचन न जाये** । जैसे राजा हरिश्चन्द्र का उदाहरण हमने सुना है कि उसने स्वप्न में कह दिया तो कह दिया,फिर जीवन में कितनी भी विषम परिस्थितियाँ आयी, पर पीछे मुड़ कर नहीं देखा और अन्त में विजय उसी की होती है,उसी दृढ़ता एवं निर्भयता के कारण आज सत्य हरिश्चन्द के नाम का पर्याय बना। सड़क कहीं नहीं जाती है, पर कितने सारे लोग उस पर चलकर अपनी मंजिल पर पहुँचते हैं, इसी प्रकार अगर हम अपने पथ पर चलते हुए मूसलों के वार के कारण

पुरूषार्थ में गति नहीं भी प्रदान कर पा रहे हैं, पर पथ बना तो रहे हैं,एक नई दिशा तो बना रहे हैं,हम जो निर्माण कर रहे हैं, उससे कितनों का पथ सरल हो जायेगा। हमें पता है जब दुश्मन मरने पर होता है तब वह अपने हर फन का प्रयोग करता है, इसी प्रकार हम रावण राज्य में राम राज्य का निर्माण कर रहे हैं, तो रावण अपने हर शस्त्र का प्रयोग तो करेगा ही,पर हम भी सर्वशक्तिवान, सत्य पिता की सन्तान हैं। अब हमारे सामने माया रावण से भी विकराल रूप रखकर क्यों न आ जाये,विघ्न व परिस्थितियाँ हिमालय से भी बड़ी क्यों न आ जायें, सगे–सम्बन्धी या साथी सुनामी से भी बड़ा तूफान क्यों न खड़ा कर दें, कर्मभोग चीन की दीवार जैसी बाधा क्यों न बन जायें, परन्तु हम अपनी पवित्रता रूपी अनमोल निधि को किसी भी हालत में हिलने नहीं देंगें। बाबा ने अपने आश्रय में लेकर आश्रम में रख हमें ऋषिकुमार बना दिया, अब इस जीवन को अपनी तपस्या की अग्नि से सनत कुमार बनाकर सारे जहान को रावण के चंगुल से मुक्त करायेंगें,स्वतन्त्र बनाकर ही छोड़ेंगे,मर जायेंगें, मिट जायेंगें पर जब तक कार्य नहीं पूरा होगा न चैन से बैठेंगे न वापस लौटेंगे, जब तक कार्य पूरा नहीं आराम हमारे लिए तब तक हराम है। ये कार्य अब हमारा लक्ष्य,उद्देश्य,मंजिल स्वप्न जीवन ही हो गया है,इसके लिए हमें कुछ भी सहन करना पड़े,मरना पड़े,तो हम मरने के लिए खुशी–खुशी तैयार है।

इस अश्वमेध यज्ञ की रक्षा के करने के लिए, चाहे ध्रुव की तरह तपस्या करनी पड़े या मीरा की तरह जहर पीना पड़े या सीता की तरह अग्नि परीक्षा देनी पड़े तो भी हम हँसते–2 तैयार हैं, कैसी भी परीक्षायें आये उसमें पास ही नहीं बल्कि पॉस विद् ऑनर होके ही दिखायेंगें। जब ओखली में सिर दे ही दिया है तो मूसलों से डरना क्या? छोड़ो मूसलों को हम उन्हें भी मजबूत बना देगें अर्थात भयानक नहीं लगेंगे। वे सब दोस्त बन जायेंगें।

ओम शान्ति

ब्र0 कु0 सुमन बहन

जानकीपुरम लखनऊ